जीवन की समस्याओं का समाधान

प्रिय मित्रों,

योग का मुख्य उद्देश्य है ईश्वर के साथ एक हो जाना और हमारे समाने चुनौती यही है – इस लक्ष्य के साथ ख़ुद को पूरी तरह से एकरूप करना।

हमारे प्रिय भाई डॉ. इचक एडिजेज़, जो एक प्रसिद्ध प्रबंधन विशेषज्ञ हैं, वे एक सरल सूत्र देते हैं जो दर्शाता है कि हम अपने उद्देश्य के साथ एकरूपता को कैसे हासिल कर सकते हैं।

हालाँकि यह सूत्र संस्थानों के लिए तय किया गया है, यह समान रूप से हम अभ्यासियों पर भी लागू होता है जो आध्यात्मिकता के मार्ग पर एक सफ़ल समापन की खोज कर रहे हैं।

यह सूत्र इस प्रकार है -

$$f\left\{\frac{\text{बाहरी “एकीकरण”}}{\text{आंतरिक “विघटन”}}\right\}$$

विभाजक यानी डिनोमिनेटर एक संस्था के आंतरिक विघटन, इसके मनमुटाव और मतभेदों को दर्शाता है। गणक यानी न्युमरेटर अपने लक्ष्य या वास्तविक उद्देश्य के साथ एकरूप होने में किसी संस्था की सफ़लता को दर्शाता है। सफ़लता आंतरिक विघटन की मात्रा के इंवरस्ली प्रपोरशनल यानी विपरीत अनुपात में होती है।

एक सरल उदाहरण है – किसी गाड़ी का इंजन उसके पहियों को चलाने के लिए 100 ब्रेक हॉर्सपॉवर (bhp) पैदा करता है लेकिन उसमें से कितनी पॉवर वास्तव में पहियों तक पहुँचती है? निश्चित रूप से पूरी तो नहीं। उसमें से कुछ घर्षण और सम्प्रेषण में खर्च हो जाती है। इन सब में पर्याप्त ऊर्जा खर्च के बाद ही बची हुई ऊर्जा पहियों को मिल पाती है। यदि गाड़ी की देखभाल करके उसे अच्छी हालत में रखा जाए तो ऊर्जा कम खर्च होगी, इसलिए पहियों तक ज़्यादा ऊर्जा पहुँचेगी, लिहाज़ा गाड़ी का उद्देश्य बेहतर रूप से पूरा होगा।

एक संस्था की सीमित ऊर्जा अनुमानित रूप से प्रवाहित होती है। यह पहले अपने आंतरिक विघटन में ही खर्च हो जाती है यानी संस्था के अंदरूनी मनमुटाव और अक्षमताओं में जितनी अधिकतम ऊर्जा आंतरिक माँगों को पूरा करने में लगाई जाती है, संस्था के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए उतनी ही कम ऊर्जा उपलब्ध होती है।

यही बात आध्यात्मिक जिज्ञासुओं के लिए भी सही साबित होती है। हम जितना ज़्यादा अपनी आंतरिक जटिलताओं में या विघटन में उलझे रहते हैं, उतना ही कम हम अपने वास्तविक लक्ष्य के साथ एकरूप हो पाते हैं। सहज मार्ग इस समस्या का समाधान प्रदान करता है। सहज मार्ग परम्परा में हम एक ऐसी आध्यात्मिक यात्रा, आंतरिक यात्रा की शुरूआत करते हैं, जिसमें हम उन तेरह चक्रों से होकर गुज़रते हैं जो अस्तित्व के तीन आरोही आयामों से सम्बन्धित हैं, जिन्हें हृदय क्षेत्र (पिण्ड प्रदेश), मनस क्षेत्र और केन्द्रीय क्षेत्र के नाम से जाना जाता है। हम जैसे-जैसे इन क्षेत्रों से गुज़रते हुए विकसित होते जाते हैं, हम देखते हैं कि एकीकरण बढ़ता जाता है जबकि यदि हमारा पतन हो रहा हो तो विघटन बढ़ता जाता है।

सहज मार्ग परम्परा में हम एक ऐसी आध्यात्मिक यात्रा, आंतरिक यात्रा की शुरूआत करते हैं, जिसमें हम उन तेरह चक्रों से होकर गुज़रते हैं जो अस्तित्व के तीन आरोही आयामों से सम्बन्धित हैं, जिन्हें हृदय क्षेत्र (पिण्ड प्रदेश), मनस क्षेत्र और केन्द्रीय क्षेत्र के नाम से जाना जाता है। हम जैसे-जैसे इन क्षेत्रों से गुज़रते हुए विकसित होते जाते हैं, हम देखते हैं कि एकीकरण बढ़ता जाता है जबकि यदि हमारा पतन हो रहा हो तो विघटन बढ़ता जाता है।

हृदय क्षेत्र के पाँच 'स' और पाँच 'अ'

हृदय क्षेत्र में पाँच चक्र हैं जो छाती और गर्दन के भाग में स्थित हैं। इन पाँच चक्रों में से हर एक चक्र पर पंचभूतों में से यानी प्रकृति के पाँच आवश्यक तत्वों में से एक की उपस्थिति प्रधान है।

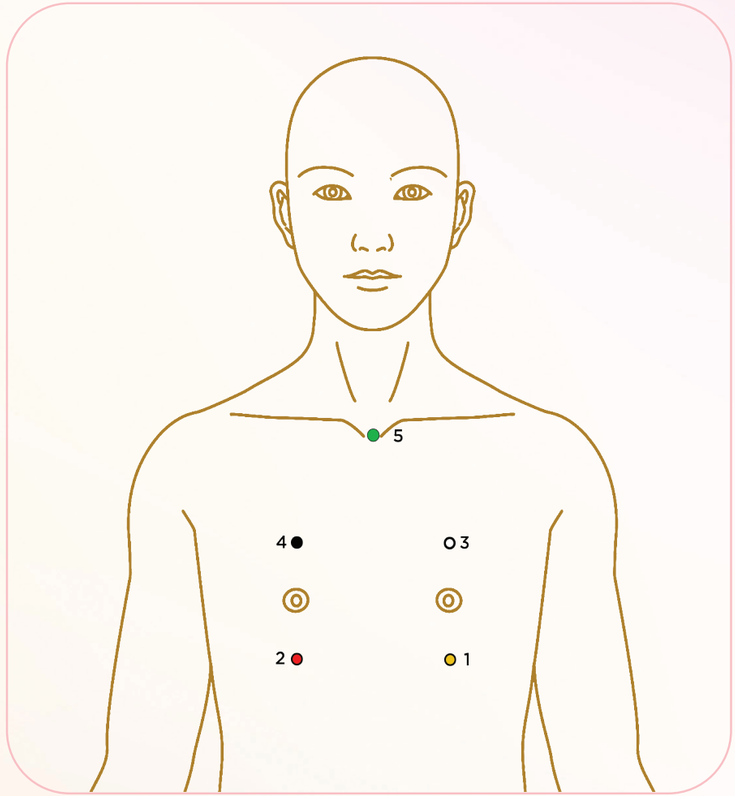

चक्र 1
पृथ्वी

चक्र 2
आकाश

चक्र 3
अग्नि

चक्र 4
जल

चक्र 5
वायु

हर एक चक्र की इन पंचभूतों से उभरने वाले विपरीत गुणों की अपनी एक अनोखी जोड़ी है।

चक्र 1

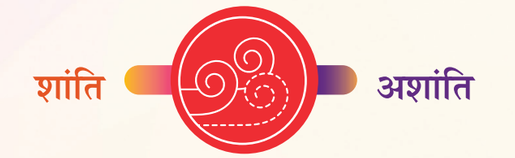

चक्र 2

चक्र 3

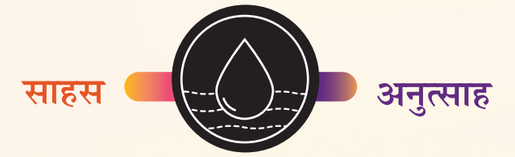

चक्र 4

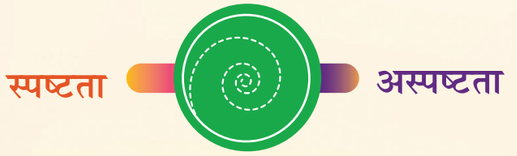

चक्र 5

आप देखेंगे कि सारे सकारात्मक गुण 'स' अक्षर से शुरू होते हैं और सारे नकारात्मक गुण 'अ' अक्षर से। हम इन्हें "पाँच स" और "पाँच अ" कह सकते हैं। ये पाँच 'स' और पाँच 'अ' अकसर स्टेट ऑफ़

ऑसिलेशन यानी दोलायमान अवस्था में होते हैं जो सकारात्मक से नकारात्मकता की ओर बार-बार झूलते रहते हैं और वापस आते रहते हैं। अतः हम अस्थिरता और विघटन की अवस्था में बने रहते हैं।

अकसर हमारी दशा इन 'स' ओर 'अ' का मिश्रण होती है। एक स्तर पर संतोष हो सकता है, फिर भले ही हम दूसरे स्तर पर अशांति का अनुभव करते हों। वास्तव में हमारी आंतरिक दशाएँ उलझन से भरी हो सकती हैं।

वह क्या है जो चक्रों की प्रवृत्ति को निर्धारित करता है? जब कुछ भी दख़ल नहीं देता तब ये चक्र स्वाभाविक रूप से एकीकरण की ओर जाते हैं, केवल विघटन की अवस्था के ही बहुत सारे कारण होते हैं। इनमें से सबसे मुख्य कारण है – संस्कारों की मौजूदगी।

वह क्या है जो चक्रों की प्रवृत्ति को निर्धारित करता है? जब कुछ भी दख़ल नहीं देता तब ये चक्र स्वाभाविक रूप से एकीकरण की ओर जाते हैं, केवल विघटन की अवस्था के ही बहुत सारे कारण होते हैं। इनमें से सबसे मुख्य कारण है – संस्कारों की मौजूदगी।

संस्कार, अतीत की घटनाओं की छापें हैं जो हमारी चेतना की गहराईयों में एकत्रित रहती हैं। किसी छाप में न सिर्फ़ अतीत की घटना की अस्तित्व संबंधी स्मृति होती है, बल्कि उससे संबंधित भावना की याद भी मिली होती है - जब वर्तमान क्षण में घटित होने वाली घटना हमारे भीतर संस्कार के रूप में एकत्रित अतीत की घटना से मेल खाती है, तब वह संस्कार उस भावना को उत्पन्न करता है जो उस समय मौजूद थी जब वह संस्कार मूल रूप से बना था। ऐसा अचेतन स्तर पर होता है फिर चाहे हमें सचेतन रूप से अतीत की वह घटना याद हो या न हो। हम अतीत की उन भावनाओं को वर्तमान परिस्थिति पर हावी होने देते हैं और तब अतीत की ये भावनाएँ हमारी सोच को पूर्वाग्रही बना देती हैं जिससे हम वर्तमान क्षण को ग़लत तरह से समझते हैं। मूल रूप से संस्कार हमें उन चीज़ों के आधार पर वर्तमान में होने वाली चीज़ों को पसंद या नापसंद करने के लिए उकसाते हैं जिन्हें हमने अतीत में पसंद या नापसंद किया है।

इसके अलावा संस्कार तामसिक, राजसिक या सात्विक हो सकते हैं। तम, रज या सत् प्रकृति के तीन गुण हैं। गुण क्या होते हैं? प्रकृति उन निश्चित आवृत्तियों पर स्पंदित होती है जो चेतना को जीवन देती हैं और वे चेतना की अभिव्यक्ति को भी निर्धारित करती हैं। प्रकृति की तीन मुख्य आवृत्तियाँ हैं – तम, रज और सत्। ये तीन स्पंदन चेतना की अभिव्यक्ति को बदलते हैं जिससे वह तामसिक, राजसिक या सात्विक बन जाती है।

संस्कार हमें उन चीज़ों के आधार पर वर्तमान में होने वाली चीज़ों को पसंद या नापसंद करने के लिए उकसाते हैं जिन्हें हमने अतीत में पसंद या नापसंद किया है।

गुण क्या होते हैं? प्रकृति उन निश्चित आवृत्तियों पर स्पन्दित होती है जो चेतना को जीवन देती हैं और वे चेतना की अभिव्यक्ति को भी निर्धारित करती हैं। प्रकृति की तीन मुख्य आवृत्तियाँ हैं – तम, रज और सत्। ये तीन स्पंदन चेतना की अभिव्यक्ति को बदलते हैं जिससे वह तामसिक, राजसिक या सात्विक बन जाती है।

पूज्य लालाजी महाराज चेतना पर गुणों के प्रभाव को समझाते हैं -

> "तम को अज्ञानता, आलस्य, निष्क्रियता, स्थूलता, भ्रम आदि समझा जाता है। इन सभी में आधार या सहारे का भाव महसूस होता है। रज को मध्य या केन्द्रीय अवस्था कहा जाता है। इसका स्वभाव संघर्ष, चंचलता, सोचना आदि है। यह हमेशा मध्य आयाम को प्रदर्शित करता है। सत् का अर्थ है – ख़ुशी, सहमति, ऊँचाई, सूक्ष्मता, पवित्रता और महानता। यह शीर्ष है। सत् का यह अर्थ हमेशा से स्वीकारा गया है।"

इन तीन गुणों के प्रति हमारी रुचि एवं अरुचि ही वह कारण है जिसके अनुसार हम संस्कारों को एकत्रित करते जाते हैं जिससे तामसिक, राजसिक और सात्विक प्रवृत्तियों का विकास होता है।

जब एक संस्कार सक्रिय हो जाता है तब यह हृदय के चक्रों से निर्मित क्षेत्र द्वारा कुछ स्तर तक सकारात्मक या नकारात्मक भावना पैदा करता है। उदाहरण के लिए, यदि हमारे संस्कार से संबंधित कोई इच्छा पूरी हो जाती है तो पहला चक्र संतोष के भाव से स्पंदित होता है जबकि यदि इच्छा अधूरी या अतृप्त रह जाए तो वही चक्र असंतोष के भाव में स्पंदित होता है। इसके विपरीत किसी अरुचिकर वस्तु के साथ संपर्क एक निश्चित स्तर का असंतोष पैदा करता है।

यदि कोई संस्कारजन्य इच्छा कुछ समय के लिए अतृप्त रह जाती है तो अंसतोष बढ़ता है। आख़िरकार, दूसरे चक्र पर भी इसका असर पड़ सकता है। उसकी शांति, अशांति में बदल जाती है। यही अशांति आगे जाकर तीसरे चक्र पर अप्रसन्नता और चौथे चक्र पर अनुत्साह में विकसित हो सकती है। अगला चरण यह है कि हमारी सोचने की प्रक्रिया भ्रमित हो जाती है जिससे पाँचवें चक्र में विकार आने से ग़लत समझ पैदा होती है।

ये सारे सकारात्मक 'स' और नकारात्मक 'अ' किसी विशेष लक्ष्य तक पहुँचने में हमारी सफ़लता के बारे में प्रतिपुष्टि देते हैं। यदि वह लक्ष्य संस्कारजन्य हुआ – यानी इच्छा या अनिच्छा से प्रेरित – तो इस इच्छा या अनिच्छा की प्राप्ति या अप्राप्ति के आधार पर हम 'स' और 'अ' गुणों का अनुभव करते हैं। सच में, संस्कार कंप्यूटर वायरस की तरह होते हैं – वे चक्र प्रणाली पर असर डालते हैं और इसकी कार्यविधि पर

नियंत्रण हासिल कर लेते हैं। जब संस्कार नियंत्रण में होते हैं तब हम 'स' वाली अवस्थाओं की अनुभूति के लिए संस्कारजन्य पूर्ति पर आश्रित होते हैं वरना हम 'अ' वाली अवस्थाओं में दुःखी रहते हैं।

पूर्ति, जो निश्चित परिस्थितियों पर आधारित होती है, वह अस्थायी और कृत्रिम होती है। असली पूर्ति में इंसान स्वाभाविक रूप से पूर्ति और अपूर्ति के सारे ख़यालों को भूल जाता है और इसकी बजाए हलकेपन की ऐसी अवस्था में बना रहता है जिसमें 'स' और 'अ' के बीच में कम से कम ऑसिलेशन यानी बदलाव होता है। यह प्रभावी रूप से संतुलन की एक अवस्था है, जैसे कि पैंडुलम की निरंतर कम होती हुई चाप जो धीरे-धीरे अपने मार्ग के केन्द्रीय बिन्दु पर आकर रुक जाती है, तब न तो वह इस ओर जाती है न ही उस ओर।

प्रिय बाबूजी इस अवस्था को एक वाक्यांश के रूप में समझाते हैं, "यह और वह अब मिट चुका है", यानी इंसान द्वंद्वों के प्रभाव के परे जा चुका है। जब "यह और वह मिट चुका है", तब विपरीत छोरों के बीच का दोलन यानी आगे-पीछे होना इतना सूक्ष्म होता है कि दो विपरीत छोर लगभग एक ही बन जाते हैं। इसलिए इस अवस्था को अव्यक्तगति कहा जाता है यानी जिसे व्यक्त न किया जा सके। बस इसीलिए कि द्वंद्व या विपरीतताएँ अव्यक्त बनी रहती है। इसका मतलब यह नहीं है कि उनका अंत हो चुका है। द्वंद्व मौजूद होते हैं फ़िर भी वे अव्यक्त बने रहते हैं। इसका मतलब यह भी है कि वे संभावित रूप से अभिव्यक्त हो सकते हैं – और वे हो भी जाते हैं। आवश्यकता के अनुसार, वे विशेष पलों में सामने आते हैं। उनकी अभिव्यक्ति का एक कारण 'स' और 'अ' गुणों को दर्शाते हुए हमें मार्गदर्शित करना, हमें प्रोत्साहित करना या इसके बदले हमें चेतावनी देना होता है।

विभिन्न चक्रों पर होने वाले स्पंदकीय पैटर्न के ख़ास संकेत होते हैं। उदाहरण के तौर पर जब हम अपने बच्चों, पति अथवा पत्नी या व्यापार सहयोगियों से बातचीत करते हैं तब वे स्पंदकीय पैटर्न अलग होते हैं। अपने बच्चों के साथ रहने में हमें जो सुकून और अद्वितीय शांति मिलती है, वह अनूठी है। एक पल के लिए कल्पना करें कि आपको बेटा आपकी गोद में बैठा है। अब अपने हृदय के आंतरिक स्पंदकीय पैटर्न पर ग़ौर

पूर्ति, जो निश्चित परिस्थितियों पर आधारित होती है, वह अस्थायी और कृत्रिम होती है। असली पूर्ति में इंसान स्वाभाविक रूप से पूर्ति और अपूर्ति के सारे ख़यालों को भूल जाता है और इसकी बजाए हलकेपन की ऐसी अवस्था में बना रहता है जिसमें 'स' और 'अ' के बीच में कम से कम ऑसिलेशन यानी बदलाव होता है।

करें। भले ही आपका बच्चा खिलौने के लिए ज़िद कर रहा हो या बाद में एक विद्रोही नौजवान बन जाए, जिस क्षण वह आपके पास आकर बैठता है, उस पल अपने दिल के स्पंदकीय पैटर्न पर ग़ौर करें। आपका संबंध उसके साथ चाहे कितना भी कटु हो, चुपचाप एक साथ बैठने से दूसरे चक्र पर एक विशेष स्पंदकीय पैटर्न निर्मित हो जाता है जोकि आत्म से संबंधित चक्र है। सबसे पहला कारण यह है कि यह हमारे प्रियजन की आत्मा है जिसने हम पर ध्यान केन्द्रित करके एकाग्र होकर हमें अपने माता-पिता के रूप में चुना। गर्भधारण के काफ़ी पहले हमारे बीच कुछ स्तर का भावनात्मक जुड़ाव था।

कभी-कभार यह बंधन इस हद तक बोझिल बन जाता है कि हम चिल्ला उठते हैं, "यह बिगड़ैल बच्चा ही क्यों?" मानो हम इस रिश्ते से ही बेख़बर हों। फिर भी यही बंधन आख़िरकार आनंददायक होता है, हमारे भीतर शांति स्थापित करता है। दोनों में से किसी भी परिस्थिति में, दूसरे चक्र के स्पंदन बहुत कुछ बयान करते हैं। जब हम आत्मा चक्र पर स्पंदन महसूस करके स्थिरता पाते हैं, हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि यहाँ पर कुछ स्तर का आत्मिक जुड़ाव है। उस समय इस चक्र पर हलकापन या नरमी का एहसास होगा। इस शांति को महसूस करते हुए, यदि हम तीसरे चक्र पर स्पंदन महसूस कर सकते हैं और वह एहसास भारीपन का न होकर ऐसा हो जैसे कुछ पिघलता जा रहा हो, तब हम आगे यकीन के साथ इस नतीजे पर पहुँच सकते हैं कि यह बंधन आत्मीयता का होने वाला है। इसके बाद वाली पुष्टि यह है कि हमारा दिल मुक्त, बोझरहित, हलका और हर्षित महसूस करेगा। ऐसा तभी होता है जब हमारे क्रम-विकास के लिए कुछ अच्छा होने वाला होता है। इसीलिए हमारे गुरुदेवों जैसी किसी महान विभूति के पास बैठने पर हमें अतुलनीय आनंद मिलता है। ऐसे संकेतों के आधार पर हम निश्चित रूप से निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि यह संबंध फलेगा और फूलेगा भी। इसके विपरीत यदि तीसरे चक्र पर भारीपन होता है और पहले चक्र पर कुछ स्तर का भारीपन हो तो यह मान कर चलें कि यह संबंध ज़्यादा दिनों तक नहीं टिकेगा।

जीवन के अहम फैसले लेने से पहले, आपको ऐसा महसूस होगा मानों आपका पूरा शरीर दो विशाल पर्वतों के बीच कुचला जा रहा हो। आप जब किसी चीज़ के पीछे भाग रहे हैं और आपको धराशायी होने का एहसास हो तो कृपया उसके पीछे भागना छोड़ दें। इसके अलावा यदि किसी इंसान की मौजूदगी में आपकी आंतरिक शांति में खलल पड़े या दूसरे चक्र पर भारीपन महसूस हो तो समझ जाएँ कि इस संबंध से दूर रहना ही अच्छा होगा।

जब "यह और वह मिट चुका है", तब विपरीत छोरों के बीच का दोलन यानी आगे-पीछे होना इतना सूक्ष्म होता है कि दो विपरीत छोर लगभग एक ही बन जाते हैं। इसलिए इस अवस्था को अव्यक्तगति कहा जाता है यानी जिसे व्यक्त न किया जा सके।

'स' और 'अ' दोनों ही गुणों के संकेतों को ध्यान में रखते हुए निर्णय लेना चाहिए। उदाहरण के लिए, चौथे चक्र से साहस की कमी का उभरना एक अहम निशानी है कि आप जिस काम को करने की सोच रहे हैं उसे करने से बचें। कल्पना करें यदि आपके पास हमेशा साहस होता? आप पूछ सकते हैं – साहस किस लिए? उदाहरण के लिए, किसी अनैतिक काम को करने के लिए साहस किस काम का? कभी-कभार पाँचवा चक्र आपको स्पष्टता प्रदान नहीं करता। तब आप ख़ुद से पूछ सकते हैं, "इस स्पष्टता का उपयोग करके मैं क्या करना चाहता हूँ? आपके दिल के इरादे क्या हैं? यदि आप उस स्पष्टता के साथ कुछ ग़लत करने जा रहें हैं तो ईश्वर का आभार मानें कि आपके पास वह स्पष्टता नहीं है।

मनस क्षेत्र के 'वे' और 'मैं' का खेल

जबकि हृदय क्षेत्र में पाँच द्वंद्व होते हैं (हर चक्र पर एक द्वंद्व), वहीं मनस क्षेत्र में सिर्फ़ एक ही होता है – वे और मैं, यानी ईश्वर और मैं। मैं जितना ज़्यादा मौजूद रहूँगा, वे उतना ही कम मौजूद होंगे और मैं जितना कम मौजूद रहूँगा, वे उतना ही ज़्यादा मौजूद होंगे। मनस क्षेत्र की सीख है – ख़ुद का नामोनिशान मिटाना और सुनिश्चित करना कि सिर्फ़ वे ही आपके जीवन में मौजूद हों।

बाबूजी ने अपने एक सहयोगी को भेजे पत्र में लिखा है, "उनकी याद के बिना बीते एक मिनट का भी अफ़सोस किया जाना चाहिए।" इससे मुझे यहूदी अवधारणा हत या पाप की याद आती है जिसका मतलब है पथभ्रष्ट होना या स्रोत से दूर जाना। यह अपने फ़ोन को एयरोप्लेन मोड में रखने के समान है – सिग्नल तो हमेशा ही मौजूद होता है लेकिन आपने ख़ुद को उसे प्राप्त करने से रोक दिया है। इसी तरह से, जिसे हम दैवीय संकेत कहते हैं, वह भी हमारे लिए हमेशा उपलब्ध होता है। हमें बस उसके प्रति ग्रहणशील बने रहने की आवश्यकता है। ईश्वरीय स्मरण में न बिताए पलों के लिए अफ़सोस करने मतलब यह नही है कि दुःख या अपराधबोध में डूब जाएँ या निराशा में बने रहें। अफ़सोस करने का मतलब है – स्रोत पर वापस जाने के लिए आत्म-विश्वास के साथ संकल्प लेना। यह प्रेम ही है जो हमारा मार्ग प्रशस्त करता है।

भौतिक क्षेत्र में प्रेम, इंद्रियों के माध्यम से कामुकता के रूप में अभिव्यक्त होता है। ख़ुद को तम यानी सृष्टि के भौतिक गुण से जोड़कर, हम उस स्तर पर पूर्णता चाहते हैं जो कि तामसिक है। शारीरिक भोग-विलास

मैं जितना ज़्यादा मौजूद रहूँगा, वे उतना ही कम मौजूद होंगे और मैं जितना कम मौजूद रहूँगा,वे उतना ही ज़्यादा मौजूद होंगे। मनस क्षेत्र की सीख है – ख़ुद का नामोनिशान मिटाना और सुनिश्चित करना कि सिर्फ़ वे ही आपके जीवन में मौजूद हों।

हृदय को कभी भी संतुष्ट नहीं कर सकते। वाकई, कामेंद्रियों की पूर्ति के बाद, हृदय में संतोष का अभाव दो लोगों के बीच बड़ी दूरी पैदा कर देता है जिससे दिल में पछतावे की भावना घर कर लेती है।

मानसिक आयाम के साथ ख़ुद को जोड़ करके हम उस स्तर पर पूर्णता की तलाश करते हैं। हालाँकि राजसिक पूर्णता अपनी अंतर्निहित अस्थिरता के कारण हमेशा ही भ्रामक होती है। रज द्वारा निर्मित की गई अस्थिरता के कारण प्रेमी अनिश्चित से बने रहते हैं, निरंतर अपने संबंध का पुनः आकलन करते रहते हैं, अतीत की घटनाओं और भावी संभावनाओं के बारे में विचार करते रहते हैं। प्रेम के आयाम में पूर्णता कभी भी निश्चित नहीं होती और किसी न किसी स्तर का आगे-पीछे का झमेला हमेशा होता ही रहता है।

आध्यात्मिक आयाम में प्रेम, भक्ति की ओर उन्नत हो सकता है यानी ईश्वर के प्रति सर्वोच्च लगाव – सिर्फ़ इस शर्त पर कि वह दैवीय गुणों यानी सतोगुण के प्रति किसी भी लगाव के परे उन्नत हो। भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि भक्ति गुणों से परे है। हम गुणों के प्रभाव में मदमत्त रहते हुए सही मायनों में ईश्वर को प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

आध्यात्मिक आयाम में प्रेम, भक्ति की ओर उन्नत हो सकता है यानी ईश्वर के प्रति सर्वोच्च लगाव – सिर्फ़ इस शर्त पर कि वह दैवीय गुणों यानी सतोगुण के प्रति किसी भी लगाव के परे उन्नत हो। भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि भक्ति गुणों से परे है। हम गुणों के प्रभाव में मदमत्त रहते हुए सही मायनों में ईश्वर को प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

यदि हम रूप और गुण के प्रति अपने लगाव को त्याग दें, तभी हम निराकार और निर्गुण को समझ सकते हैं। उदाहरण के लिए यदि हम शांति या फिर ब्रह्मविद्या जैसे सात्विक गुणों की इच्छा रखते हुए ईश्वर की पूजा करें तो इससे ईश्वर के साथ हमारा संबंध दूषित हो जाएगा। उस एकमात्र इच्छा की मौजूदगी से वह संबंध लेन-देन का हो जाएगा। यदि हम ऋषि अष्टावक्र की सलाह को मानकर अपनी इच्छाओं को विष समझें तो हम समझ जाएँगे कि विष की एक बूँद भी पवित्र संबंध को अपवित्र कर सकती है और भक्ति को फ़लीभूत होने से रोक देती है।

भक्ति गुरु के मानसिक गर्भ को प्रभावित करती है और यदि भक्ति प्रेमपूर्ण, श्रद्धापूर्ण, आभारपूर्ण मुलाकातों से नियमित बनी रहती है तो एक नई विभूति - आध्यात्मिक विभूति का जन्म दिव्य लोक में होता है। यह आपकी अपनी हस्ती है। आप किसी और की हस्ती को नहीं अपना सकते, ठीक वैसे ही जैसे आप किसी दूसरे की भक्ति की नकल नहीं कर सकते।

हर किसी को विकसित होना होगा और वे हो सकते हैं ऐसी दिव्य विभूति (अपनी ख़ुद की दिव्यता) को प्राप्त करने के लिए। एक अभ्यासी को अपने मानसिक गर्भ में रखने के लिए मालिक की पूर्वापेक्षा होती है कि वह अभ्यासी प्रेम की खातिर प्रेम करे, आराधना की खातिर आराधना करे और श्रद्धा की खातिर श्रद्धा रखे - न कि प्रेम, आराधना, श्रद्धा के बदले में कुछ पाने की खातिर। उसमें कोई भी व्यक्तिगत इच्छा या आकांक्षा नहीं हो सकती, न ही किसी भी तरह की आगामी पूर्ति की कोई उम्मीद या माँग।

भक्ति गुरु के मानसिक गर्भ को प्रभावित करती है और यदि भक्ति प्रेमपूर्ण, श्रद्धापूर्ण, आभारपूर्ण मुलाकातों से नियमित बनी रहती है तो एक नई विभूति - आध्यात्मिक विभूति का जन्म दिव्य लोक में होता है। यह आपकी अपनी हस्ती है।

एक भक्त शरणागति का जीवन जीता है, चिन्तामुक्त समर्पण की एक अवस्था जिसमें वह ख़ुशी-ख़ुशी असुरक्षित बने रहने का चयन करता है। शरणागति में प्रेम होता है लेकिन प्रेम का ख़याल नहीं होता, श्रद्धा होती है लेकिन यह ख़याल कि "मैं श्रद्धा रखता हूँ" नहीं होता, कृतज्ञता होती है लेकिन यह ख़याल कि "मैं कृतज्ञ हूँ" मिट चुका होता है। यहाँ तक कि शरणागति का ख़याल भी नहीं होता क्योंकि उसका निर्दयी अहंकार पूरी तरह से नरम पड़ चुका है। एक पेड़ के पैदा होने के लिए बीज को मिटना ही पड़ता है। अपनी आध्यात्मिक हस्ती को जन्म देने के लिए "मैं" को ओझल होना ही होगा। बाद में, हम बाबूजी महाराज की अवस्था के करीब जाने की कोशिश कर सकते हैं - सूक्ष्म, दूसरों पर कुछ भी न थोपना बल्कि उनके चारों ओर बस चीज़ों का होते जाना।

आंतरिक विघटन की वह स्थिति जिसे हम कभी-कभार अपने भीतर पाते हैं, वह असंख्य संस्कारों की परस्पर क्रिया से उभरने वाली जटिलता के कारण होती है यानी हमारे स्वभाव को प्रभावित करने वाले तीन गुण और पिण्ड प्रदेश में मौजूद पाँच द्वंद्व जो हमारे दृष्टिकोण को धूमिल कर देते हैं। इस जटिलता का तोड़ है - "वे और मैं" का सरल सा द्वंद्व। जब हम अपनी निम्न प्रकृति को मिटाते हैं, उनकी प्रकृति उभरकर आती है तब "वे और मैं" का द्वंद्व आख़िरकार "वे" की विलक्षणता बन जाता है।

जैसा कि लालाजी महाराज ने लिखा है, "ईश्वर ने आपको दिल में छिपाकर रखा है और आपको प्रकट किया है। आप ख़ुद को छिपाकर ईश्वर को प्रकट करें। यही सच्ची साधना है।

प्रेम और आदर सहित,
कमलेश

पूज्य श्री चारीजी महाराज

के 95वें जन्मोत्सव के अवसर पर दिया गया संदेश

जुलाई 23, 24, और 25, 2022

heartfulness
advancing in love